(10) (B)
507
H

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1276/1081

आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 507

S/1911

ओ३म्

क्रांति का सिंहनाद

अथवा

महात्मा गांधी

का

अल्टीमेटम

पं० अवधबिहारीलाल शर्मा "विमल"

सआदतगञ्ज, लखनऊ—१९३०

891.43
Sh23K

IMPERIAL RECORD
RECEIVED.
10 DEC. 1930
DEPARTMENT

Hindu Social Reform Vimal Granth Mala Series No. 14.

ॐ

क्रान्ति का सिंहनाद

अथवा

महात्मा गांधी का अल्टीमेटम

ऐ ज़बां ख़ामोश वर्ना काट डाली जायगी।
तेग़ये डायर से बोटी छांट डाली जायगी॥
चाप लूसी छोड़कर तूने कहा जो साफ़ साफ़।
तो सज़ा जलियान वाले बाग़ की दी जायगी॥
"विमल"

सम्पादक—
पं० अवधबिहारीलाल शर्मा 'विमल'

प्रकाशक—
बिमल ग्रंथमाला आफिस सआदतगंज
लखनऊ

All rights Reserved

प्रथम वार ४०००] सन् १९३० [मूल्य ‒) मात्र

मुद्रक—पं० मन्नालाल तिवारी,
हरीकृष्ण कार्यालय, शुक्ला प्रिंटिंग प्रेस, लखनऊ

ओ३म्

क्रान्ति का सिंहनाद अथवा महात्मा गांधी का अल्टीमेटम

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 507
Date 13:12:71
GOVT. OF INDIA

१. वंदेमातरम्

सुजलाम् सुफलाम् मलयज शीतलाम्
शस्य-श्यामलाम् मातरम्। वंदे०
शुभ्र ज्योत्स्ना पुलकित यामिनीम्
फुल्ल कुसुमित-द्रुम-दल-शोभिनीम्
सुहासिनीम्, सुमधुर-भाषिणीम्
सुखदाम् वरदाम् मातरम्। वंदे०
त्रिंश कोटि कंठ कलकल-निनाद-कराले,
द्वित्रिंश कोटि भुजैर्धृत खरकरवाले।
के बोले मा, तुमि अबले!
बहु-बल-धारिणीम्, नमामि तारिणीम्,
रिपु-दल-वारिणीम् मातरम्। वंदे०
श्यामलाम् सरलाम् सुस्मिताम् भूषिताम्
धरणीम् भरणीम् मातरम्। वंदे०

२. राष्ट्रीय झण्डा

बिजयी विश्व तिरंगा प्यारा,
झंडा ऊँचा रहे हमारा। टेक
सदा शक्ति बरसाने वाला, प्रेम-सुधा सरसाने वाला,
वीरों को हरषाने वाला, मातृ-भूमि का तन-मन सारा। झंडा०

स्वतंत्रता के भीषण रण में, लखकर बढ़े जोश क्षण-क्षण में ;
काँपें शत्रु देखकर मन में, मिट जाये भय संकट सारा । झंडा०
इस झंडे के नीचे निर्भय, लें स्वराज्य हम अविचल निश्चय ;
बोलो भारत-माता की जय, स्वतंत्रता हो ध्येय हमारा । झंडा०
आओ प्यारे वीरो आओ, देश-धर्म पर बलि-बलि जाओ ;
एक साथ सब मिलकर गाओ, प्यारा भारत-देश हमारा । झंडा०
इसकी शान न जाने पाये, चाहे जान भले ही जाए ;
विश्व-विजय करके दिखलाये, तब होवे प्रण पूर्ण हमारा । झंडा०

३. स्वतंत्र भारत

कवित्त

ग्राम ग्राम धाम धाम चर्चा स्वतंत्रता की,
सुखद स्वराज्य ध्येय ठहरा सभी का है।
सरसा स्वदेशी से सनेह रस बरसा है ;
उमड़ा प्रवाह सा उमंग की नदी का है ॥
हृदय सिंहासन पै शोभित "स्वरूप" आज,
गाँधी के ललाट लाग्यो भारत को टीका है ।
भागा है विरोध वैर देश अनुरागा सब,
जागा आज फेर भाग्य भारत मही का है ।

४. राष्ट्रपति जवाहरलाल

जेल में

गया जेल में है हमारा जवाहिर ।
वह मोती की आँखों का तारा जवाहिर ॥
गुलामी की जंज़ीर को जिसने तोड़ा ।
बृटिश कूट नीति के भंडा को फोड़ा ॥
अहिंसा का कर में लिया उसने कोड़ा ।
पड़ा कूद संग्राम में मुँह न मोड़ा ॥
जो था मात भारत का प्यारा जवाहिर ।
गया जेल में है हमारा जवाहिर ॥

गुलामी की जंज़ीर में जो कसे थे।
गवरमेंट के लोभ में जो फँसे थे॥
युवक देश के भोग में जो फँसे थे।
निराशा के जो मन्दिरों में बसे थे॥
उठाकर उन्हें यह उचारा जवाहिर।
गया जेल में है हमारा जवाहिर॥
किया दूध का दूध पानी का पानी।
पड़ी क़ैद में मात भारत भवानी॥
हो आज़ाद भारत यही ठान ठानी।
न आगे पड़ें जिसमें सख़्ती उठानी॥
यही दिल में अपने विचारा जवाहिर।
गया जेल में है हमारा जवाहिर॥
हुआ मुल्क आज़ाद क्यों सो रहे हो।
बनाओ नमक वक़्त क्यों खो रहे हो॥
अभी से ही हिम्मत को क्यों हर रहे हो।
बढ़ाओ क़दम देर क्यों कर रहे हो॥
यही गाँधी ने पुकारा जवाहिर।
गया जेल में है हमारा जवाहिर॥
ज़िमींदार करते किसानों पै सख़्ती।
वृटिश की थीं ख़ूनी कृपाणें चमकतीं॥
लिया शीघ्र ही कर में नीति की तख़्ती।
थी आज़ादी की दिल में अग्नी धधकती॥
किसानों का नूरे नज़ारा जवाहिर।
गया जेल में है हमारा जवाहिर॥ "विमल"

५. इन गाँधी टोपी वालों ने

इक लहर मचा दी भारत में इन गाँधी टोपीवालों ने।
"स्वाधीन बनो" यह सिखा दिया, इन गाँधी टोपीवालों ने॥

सदियों की ग़ुलामी में फँसकर, अपने को भी जो भूले थे।
कर दिया सचेत उन्हें अब तो, इन गाँधी टोपीवालों ने॥
सर्वस्व देश-हित कर दो तुम, अर्पण सुपूत हो माता के।
सर्वस्व-त्याग का मंत्र दिया, इन गाँधी टोपीवालों ने॥
अनहित में भारत-माता के, जो लगे देश द्रोही बनकर।
उनको सत पथ पर चला दिया, इन गाँधी टोपीवालों ने॥
पट बंद हुए कितने मिल के, लंकाशायर भी चीख़ उठा।
चरख़े सा चक्र चलाया जब, इन गाँधी टोपीवालों ने॥
रोते हैं विदेशी व्यापारी, अपना सर धुन बिललाते हैं।
खादी से प्रेम किया जब से, इन गाँधी टोपीवालों ने॥
आदर्श जो हैं इस भारत के, दोनों के प्राण-पियारे हैं।
नेता गाँधी को बना लिया, इन गाँधी टोपीवालों ने॥
"अब मेल करो आपस में तुम, ज़ंजीर ग़ुलामी की तोड़ो।
माना गाँधी का कहना यह, इन गाँधी टोपीवालों ने॥
है विकट समस्या 'तीस' की भी, उसको भी हल करना होगा।
ज़रिया बस एक निकाल लिया, इन गाँधी टोपीवालों ने॥
युवकों के हृदय-दुलारे हैं, आँखों के प्यारे तारे हैं।
चुन लिया जवाहर को राजा, इन गाँधी टोपीवालों ने॥
खुश हुआ 'दग्ध' यह सुन करके, स्वाधीन बनेगा भारत अब।
विश्वास दिलाया ऐसा ही, इन गाँधी टोपीवालों ने॥

श्रीविष्णुमित्र विद्यार्थी "दग्ध"

६. स्वदेशी गान

[इस कविता पर श्री बेनीमाधव खन्ना ने ४१) पुरस्कार दिया था

जिएँ तो स्वदेशी बदन पर वसन हो,
मरें भी अगर तो स्वदेशी कफ़न हो॥ टेक॥
पराया सहारा है अपमान होना,
ज़रूरी है निज ध्यान का ध्यान होना।

है वाजिब स्वदेशी पै कुर्बान होना।
इसी से है संभव समुत्थान होना।
लगन में स्वदेशी की हर मर्दोज़न हो ॥ मरें भी अगर० १ ॥
निछावर स्वदेशी पै कर मालोज़र दो,
स्वदेशी से भारत का भंडार भर दो।
रहें चित्र-से वह चकाचौंध कर दो,
दिखा पूर्वजों के लहू का असर दो।
स्वदेशी हो सज-धज, स्वदेशी चलन हो ॥ मरें भी अगर० २ ॥
चलो इस तरह अपना चर्खा चलादो,
मनो सूत की ढेरियाँ तुम लगादो।
बुनो इतने कपड़े मिलों को छका दो,
जमा दो स्वदेशी का सिक्का जमा दो।
स्वदेशी हो गुल औ स्वदेशी चमन हो ॥ मरें भी अगर० ३ ॥
न अतलस न मखमल की हो चाह तुमको,
कपट सिंधु की मिल गयी थाह तुमको।
न अब कर सकेंगे वे गुमराह तुमको,
किसी की रही कुछ न परवाह तुमको।
फ़िदाए वतन अपना तन प्राण धन हो ॥ मरें भी अगर० ४ ॥
उठो कर्म वीरो, तुम्हें कौन भय है,
स्वदेशी का संग्राम भो शान्तिमय है।
प्रथा पाप की पाप में आप लय है,
विजय है, विजय है, तुम्हारी विजय है।
स्वदेशी हो पूजन, स्वदेशी भजन हो ॥ मरें भी अगर० ५ ॥
समर स्वत्व का वीरवर ठान दो तुम,
किसी के प्रलोभन में मत कान दो तुम।
खुशी से स्वदेशी पै दे जान दो तुम,
बने जिस तरह माँ को सम्मान दो तुम।
स्वदेशी हो जीवन, स्वदेशी मरन हो ॥ मरें भी अगर० ६ ॥

बनो कर्मयोगी न तुम कर्म छोड़ो,
गुलामी की ज़ंजीर चर्खे से तोड़ो।
मुसीबत उठाओ मगर मुँह न मोड़ो,
तपोबल से अन्याय का गर्व गोड़ो।
स्वदेशी हो पोषण स्वदेशी भरन हो॥ मरें भी अगर० ७॥
तुम्हीं तो स्वदेशी के हो आज भ्राता,
तुम्हीं देश के भाग्य के हो विधाता।
तुम्हीं पर है सौ जाँ से कुर्बान माता,
तुम्हें फिर न क्यों ध्येय का ध्यान आता।
जो साधन स्वदेशी हो, संकट शमन हो॥ मरें भी अगर० ८॥
करो पर्ण कि आज़ाद होकर रहेंगे,
जहाँ में कि बरबाद होकर रहेंगे।
सितमगर ही या शाद होकर रहेंगे,
कि हम शाहो आबाद होकर रहेंगे।
स्वदेशी हो 'अख़्तर" स्वदेशी कथन हो॥ मरें भी अगर० ६॥

श्रीस्वामी नारायणानंदजी "अख़्तर"

७. चरख़ा

गज़ल दादरा

टेक—गाँधी बाबा ने भारत जगाय दिया है।
हमें चरख़े का मंतर बताय दिया है॥
शैर—जब से घर-घर में ये चरख़े का चलाना छूटा;
बस उसी रोज़ से भारत का नसीबा फूटा।
आके परदेशियों ने ख़ूब खसोटा लूटा;
धर्म छूटा सभी इन्सान का पौरुष टूटा।
आँखों से पट्टी हटाकर गुलामी की,
मारग पुराना दिखाय दिया है॥ गाँधी बाबा० १
शैर—कौन सा घर था जहाँ चरख़े नहीं चलते थे;
लाखों मन सूत इन्हीं चरख़ों से निकलते थे।

महीन-मोटे कपड़े हर तरह के बनते थे ;
शुद्ध मज़बूत थे सुख से उन्हें पहनते थे।
विलायत से आके राज़ जमा के,
हाय ! गोरों ने वह सुख नसाय दिया है ॥ गाँधी बाबा० २
शैर—ब्याह-शादी में था दहेज़ में चरख़े का चलन ;
नारियाँ हिंदू मुसलमान समझती थीं सगुन।
नेम से नित्य वे चरखे को चलाती थीं पुन ;
सुख से भरपूर रहो, उससे निकलती थी धुन।
धर्म से हमने कैसे बिमुख हो,
पापों में मन को लगाय दिया है ॥ गाँधी बाबा० ३ ॥
शैर—विदेशी सारियाँ, क्रेप व अद्धी मलमल ;
हिंद के लोग गिरे देख उन्हें मुँह के बल।
नारियाँ लाज से घूँघट न जो उठाती हैं ;
पहन के उनको साफ़ नंगी नज़र आती हैं।
डूब मरो, तुम्हें लाज न आती,
पैसा व इज़्ज़त गँवाय दिया है ॥ गाँधी बाबा० ४ ॥
शैर—कुछ अभी ग़ौर करो हिंदू औ मुसलमानो ;
तलाक़ दे दो इन्हें, अपनी दशा पहचानो।
चलाओ चरखा, तजो शौक़, वह दिन आएगा ;
स्वराज्य दौड़ कर क़दमों में सिर नवाएगा।
सूत के धागे में सारी है ताक़त,
"माधो" ने तुमको सुनाय दिया है ॥ गाँधी बाबा० ५ ॥

८. ग़ज़ल स्वदेशी खादी

इस धज से चलो अपने चरख़े को चला दो।
लाखों ही मनों सूत का ढेर लगा दो ॥
खादी पै अपने तन मन धन को करो निसार।
जो वस्त्र विदेशी हों उन्हें शीघ्र जला दो ॥

भारत के कोने-कोने में चरखे का कर प्रचार ।
बेकार जो हों उनको भी यह कार बता दो ॥
घर में हों वस्त्र देशी, कुल वस्तु स्वदेशी ।
भारत से विदेशी का चलन पूरा मिटा दो ॥
कश्मीरे, पापलैन, गिरंटों की जगह तुम ।
खादी को मँगा बच्चों के अब कोट सिला दो ॥
शिक्षा दो उनको ऐसी स्वदेशी के हों व्रती ।
बन जायँ कर्मयोगी, यही जाम पिला दो ॥
तुम भूलना न मित्रो, गाँधी के मंत्र को ।
"लेंगे स्वराज्य सूत से चरखे के" सुना दो ॥
खादी को बीनो इस क़दर भारत में मिल सभी ।
अभिमानी मील वालों के तुम छक्के छुटा दो ॥
निज पूर्वजों के खूँ का असर तुममें है अगर ।
लाज़िम है कि खादी से प्रेम अपना दिखा दो ॥
संग्राम शांतिमय यहो करना पड़े "विमल" ।
भारत में स्वदेशी ही का तुम सिक्का जमा दो ॥

९. मेरी भावना

ग़ज़ल

न चाहूँ मान दुनिया में न चाहूँ स्वर्ग को जाना ।
मुझे वर दे यही माता रहूँ भारत पर दीवाना ॥
करूँ मैं क़ौम की सेवा पड़ें चाहे करोड़ों दुख ।
अगर फिर जन्म लूँ आकर तो भारत ही हो आना ॥
लगा रह प्रेम हिन्दी में पढ़ूं हिन्दी लिखूं हिन्दी ।
चलन हिन्दी चलूँ हिन्दी पहिरना ओढ़ना खाना ॥
भवन में रोशनी मेरे रहे हिन्दी चिराग़ों की ।
स्वदेशी ही रहे बाजा बजाना राग का गाना ॥
लगे इस देश ही के अर्थ मेरे धर्म विद्या धन ।
करूँ मैं प्राण तक अर्पण यही प्रण सत्य है ठाना ॥

नहीं कुछ ग़ैरमुमकिन है जो चाहो दिलसे बिस्मिल तुम।
उठा लो देश हाथों पर न समझो अपना बेगाना॥

१० हमारी ख्वाहिश

ग़ज़ल

सर फ़रोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है।
देखना है ज़ोर कितना बाज़ुए क़ातिल में है॥
रहबरे राहे मोहब्बत रह न जाना राह में।
लज़्ज़ते सहरान वरदी दूरये मंज़िल में है॥
वक़्त आने दे बता देंगे तुझे ऐ आसमां।
हम अभी से क्या बतायें क्या हमारे दिल में है॥
अब न अगले वलवले हैं और न अर्मानों की भीड़।
सिर्फ़ मिट जाने कि हसरत एक दिले बिस्मिल में है॥
आज मक़तल में ये क़ातिल कह रहा है बार बार।
क्या तमन्नाये शहादत भी किसी के दिल में है॥
ऐ शहीदे मुल्को मिल्लत मैं तेरे ऊपर निसार।
अब तेरी महफ़िल का चर्चा क़ौम की महफ़िल में है॥

११. देश भक्त प्रलाप

हमारा हक है, हमारी दौलत किसी के बाबा का ज़र नहीं है।
है मुल्क भारत वतन हमारा, किसी की ख़ाला का घर नहीं है॥
हमारी आत्मा अजर-अमर है, निसार तन मन स्वदेश पर है।
हैं चीज़ क्या जेलो गन मशीनें, क़ज़ा का भी हमको डर नहीं है॥
न देश का जिसमें प्रेम होवे, दुखी के दुख से जो दिल न रोवे।
ख़ुशामदी बन के शान खोवे, वो ख़र है हरगिज़ बशर नहीं है॥
हुक़ूक़ अपने ही चाहते हैं, न कुछ किसी का बिगाड़ते हैं।
तुझे तो ऐ ख़ुदग़रज़, किसी की भलाई मद्दे नज़र नहीं है॥
हमारी नस-नस का ख़ून तूने, बड़ी सफ़ाई के साथ चूसा।
है कौन-सी तेरी पालिसी वह कि जिसमें घोला ज़हर नहीं है॥

बहाया तूने है ख़ूं उसी का है तेरे रग-रग में अन्न जिसका।
बता दे बेदर्द तू ही हक़ से सितम ये है या क़हर नहीं है॥
जो बेगुनाहों को है सताता, कभी न वह सुख से बैठ पाता।
बड़े-बड़े मिट गये सितमगर, क्या इसकी तुझको ख़बर नहीं है॥
सँभल-सँभल अब भी ओ लुटेरे, है तेरे पापों का अंत आया।
कि ज़ुल्म करने में तूने ज़ालिम, ज़रा भी रक्खी कसर नहीं है॥
ग़ज़ब है हम बेकसों की आहें, ज़मीन औ आसमाँ हिला दें।
ग़लत है समझे हैं ये जो समझे कि आह में कुछ असर नहीं है॥
है यकदिन आख़िर तुझे भी मरना इसीसे लाज़िम है नेकी करना।
मगर तेरे दिल में आक़बत का ज़रा भी ख़ौफ़ो ख़तर नहीं है॥
"कमल" ये है कौल शायरों का अधर्मी फूला फला न देखा।
घमण्ड से जिसने सर उठाया बस उसका गर्दन प सर नहीं॥

१२. प्रणवीर वकील

ग़ज़ल दादरा

जगमें डंका विजय का बजाऊँगा मैं।
सारे साज़ प्रलय के सजाऊँगा मैं॥

शेर—जो कुछ बुज़ुर्ग कहते थे वह कर दिखाते थे।
रखते थे लाज बात की औ सर कटाते थे॥
इस दम रँगे सियार हैं लाखों ही घूमते।
लेटे हुए ज़मीन पर आकाश चूमते।
ऐसे लोगों से प्रीति हटाऊँगा मैं॥ जग में० ॥

शेर—कुट्टे उछालना ही सदा जिनका काम है।
ऐसे नरों से बात तक करना हराम है॥
दुख देश का नशाने में जीवन बिताऊँगा।
छोड़ूंगा वकालत को अदालत न जाऊँगा॥
अपना ऐसा विचार बनाऊँगा मैं॥ जग में० ॥

शेर—तलवारों तीरों तोपों तमंचों के वार से।
तिल भर नहीं टलूँगा मैं अपने विचार से॥

हो वार वार वार पै तिल तिल पै घाव हों।
सारा जहां हो शत्रु मेरे कम न चाव हों॥
शंका मरने की दिल में न लाऊँगा मैं॥ जग में०॥
शेर—कहते हैं लोग जेल व फाँसी का डर नहीं।
मुझको तो काल का ज़रा ख़ौफ़ो ख़तर नहीं॥
कट कट के बोटियाँ गिरें न आह करूँगा।
बनकर ग़ुलाम जीने की न चाह करूँगा॥
पैर पीछे न नेक हटाऊँगा मैं॥ जग में०॥
शेर—हिन्दू मुसलमाँ एक ही माता के लाल दो।
मिल करके फूट हिन्द से फ़ौरन निकाल दो॥
है भाई भाई में ये लड़ाई का काम क्या।
रखते हैं दीन धर्म बताओ ग़ुलाम क्या॥
यही धर्म की सीख सिखाऊँगा मैं॥ जग में०॥
शेर—बन्दूक़ें दग रही हों औ खंजर हों चल रहे।
दरिया हों बहते ख़ून के हों सर उछल रहे॥
शंकर का नाम लेके जब मैदाँ में आऊँगा।
हस्तो ज़मीं की क्या है फ़लक़ तक हिलाऊँगा॥
देश क़ौमों पर जान गमाऊँगा मैं॥ जग में०॥
शेर—हिन्दू व मुस्लिमों का पसीना गिरे जहाँ।
ख़ुश होके ख़ून अपना बहाऊँगा मैं वहाँ॥
अन्यायकारियों का प्रभू चूर हो घमण्ड।
ज़्यादा न लिखो अपनी क़लम थाम लो 'प्रचंड'॥
धर्म अपना अहिंसा निभाऊँगा मैं॥ जग में०॥

१३. हमारा विश्वास

हमें विश्वास है भारत का दिन अब फिरने वाला है।
हमारे देश के बच्चों ने होश अपना संभाला है॥
बहुत दिन हो गये हमको अन्धेरी रात में सोते है।
मगर जल्दी ही परदा आँखों से अब हटनेवाला है॥

भँवर घबड़ाता है क्योंकर कि अब थोड़ा सा बाक़ी है।
निकल आया है अब सूरज कमल भी खिलनेवाला है॥
मलेंगे हाथ यह सुनकर बिचारे तंग दिलवाले।
सुनहरे बादलों से आसमाँ अब घिरनेवाला है॥
जिगर हो जायगा रोशन अन्धेरा बेनिशाँ होगा।
मिलेगा .खुद ब.खुद तुमको जो माधव मिलनेवाला है॥

१४. हमारी कल्पना

कव्वाली

.खुशी के दौर दौरे से है यां रखो मुहन पहले।
बहार आती है पीछे है ख़िज़ां गिरदे चमन पहले॥
मुहब्बाने वतन होंगे हज़ारों बे वतन पहले।
फलेगा हिन्द पीछे और भरेगा अंडमन पहले॥
अभी मीराज का क्या ज़िक्र यह पहली ही मंज़िल है।
हज़ारों मंज़िलें करनी हैं तै हमको कठिन पहले॥
मुनव्वर अंजमन होती है महफ़िल गर्म होती है।
मगर कब जबकि .खुद जलती है शमए अंजमन पहले॥
ज़मीने हिन्द भी फूले फलेगी एक दिन लेकिन।
मिलेंगे ख़ाक में लेकिन हमारे गुलबदन पहले॥
न हो कुछ ख़ौफ़ मरने का न हो कुछ फ़िक्र जीने की।
अगर ऐ हमदमों मन में लगी हो एक लगन पहले॥
उन्हीं के सर रहा सेहरा उन्हीं पर ताज कुर्बानी।
जिन्होंने फाड़कर कपड़े रखा सर पर कफ़न पहले॥
हमारा इंडिया योरुप से भी ले जायगा सबकत।
जो गाँधी से मुहब्बाने वतन हो इण्डियन पहले॥
न राहत की करें परवा न हम दौलत के तालिब हों।
करें सब मुल्क पर कुर्बान तन मन और धन पहले॥
तिलक महराज की जय हो उन्होंने यह दिखाया था।
कि शुभ कर्मों में होते हैं हमेशा बिरहमन पहले॥

हमें दुख भोगना लेकिन हमारी नस्ल सुख पाये ।
ये दिल में ठान लें अपने यहाँ के मर्दोज़न पहले ॥
मुसीबत या क़यामत आ कहाँ जंज़ीरो ज़िन्दाँ हैं ।
यहाँ तय्यार बैठे हैं ग़रीबाने वतन पहले ॥

१६. (दिल में है)

ग़ज़ल

एक दिन देखेंगे हम भी वस्फ़ क्या क़ातिल में है ।
क़ाफ़िलाये दिल मेरा उम्मीद की मंज़िल में है ॥
यार की फ़ुर्क़त में अब तड़पा नहीं जाता तबीब ।
दम निकल जाये यही हसरत दिले बिस्मिल में है ॥
मजलिसे माशूक़ में हैं बन्द आशिक़ की ज़बां ।
क्या बतायें आज कल जो कुछ हमारे दिल में है ॥
आज नाचेगी बरहना तेग़ ऐ क़ातिल तेरी ।
इसलिये जाँबाज़ों का मजमां तेरी महफ़िल में है ॥
क़ौम के मजनूँ न घबड़ा चन्द दिन तस्कीन रख ।
तेरी आज़ादी की लैला जेल के मयमिल में है ॥
एक दिन सर सब्ज़ होकर यह दिखायेगा समर ।
क्या हुआ "सरयू" अगर इस वक्त दानागिल में है ॥

१७. चेतावनी

कव्वाली

जागो, हुआ सबेरा, गाँधी जगा रहा है ।
यह आत्म-बल-प्रवर्द्धक, शुभ काल आ रहा है ॥
अन्याय की निशा से; अंधेर से न डरना ।
सूरज-स्वराज्य अपनी लाली दिखा रहा है ॥
सुस्ती के बिस्तरे से, फुरती से उठ खड़े हो ।
सब जग चुके तुम्हीं पर दारिद्र छा रहा है ॥
हो नौजवान तुमको, जग जाना चाहिए अब ।
सोने दो वृद्धजन को आलस्य आ रहा है ॥
यह दासता तो सुख का सपना है, भ्रम है 'योगी' ।
स्वाधीनता के सुख का अवसर ये आ रहा है ॥

१७. असहयोग

गज़ल

ग़ैर कहते हैं कि हम ज़ोरो जफ़ा क्यों न करें।
हम कहते हैं कि फिर इसका गिला क्यों न करें॥
हुब्बे क़ौमी का तक़ाज़ा है कि हो जायं शहीद।
क़ौम पर अपनो दिलोजान फ़िदा क्यों न करें॥
.ज़ुल्म हर रोज़ नये होते हैं अब तो हम पर।
नालओ आह से फिर हश्र बपा क्यों न करें॥
सिर्फ़ एहसान फ़रामोशी हो जिनका शेवा।
उनसे हम तर्के मवालात भला क्यों न करें॥
हमको ताक़ीद है ओफ़ न ज़बां पर लायें।
चाहे वह .ज़ुल्मो सितम हदसे सिवा क्यों न करें॥

१८. वतन के वास्ते

गज़ल

जो पड़ें झेलें खुशी से वह वतन के वास्ते।
अबतो लाज़िम है यही हर इंडियन के वास्ते॥
भाई भाई से मिलें समझें अछूतों को न छूत।
चाहिये क्या और हिन्दू संगठन के वास्ते॥
तौक़ गरदन के लिये ज़ंजीर पावों के लिये।
उस पै तुर्रा मोह ख़ामोशी दहन के वास्ते॥
क्यों क़फ़स में यों न बुलबुल जान से बेज़ार हो।
वह तो है पैदा हुई सैरे चमन के वास्ते॥
चाहते हैं हम ज़ियारत बाग़ जलियां की करें।
शेख़ को क़ाबा है काशी बरहमन के वास्ते॥
आरज़ू हमको यही है बाद मरने के मिले।
देश की दो गज़ ज़मीं खद्दर कफ़न के वास्ते॥
"बन्धु" हम तो हैं वतन के वास्ते पैदा हुये।
कैसा लैला के लिये था नल दमन के वास्ते॥

देश के ग्यारह दावे

ग़ज़ल

लिखी महात्मा की ग्यारा शर्तों पै ध्यान अब तुमको लाना होगा।
सहे हैं ज़ुल्म व सितम बहुत कुछ न आगे हमको सताना होगा॥
नशीली चीज़ों का क्रय व विक्रय को बन्द कर इकसचैंज़ की दर।
दो एक शिलिंग चार पैंस की कर ये करके तुमको दिखाना होगा॥
ज़मीन का भी लगान आधा करो, कृषक जिसमें दुख न पायें।
विभाग इसका हमारी कौंसिल के हाथ में अब दिलाना होगा॥
लगाय रक्खा नमक पै कर जो उठा लो इसको करो न देरी।
है फौज़ पल्टन का ख़र्च जो कुछ भी आधा उसको घटाना होगा॥
बड़े बड़े अफ़सरों की तनख़्वाह आधी कर दो या और कुछ कम।
घटी हुई आमदनी से अपना ही ख़र्च तुमको चलाना होगा॥
स्वदेशी कपड़े की उन्नती के लिये विदेशी बसन के ऊपर।
लगाओ कर उस पै चौगुना तुम नियम ये ऐसा बनाना होगा॥
जहाज़ व्यापार के लिये जो हमारे चलते समुद्र में हैं।
लगाया उन पै जो कर है तुमने वह जल्द तुमको हटाना होगा॥
जिन्हें कि हत्या के जुर्म में है मिली सज़ा उनको छोड़ करके।
जो राजनीतिक हमारे क़ैदी हैं उनकी बन्दी कटाना होगा॥
जो राजनीतिक के मामले चल रहे हैं उनको उठाओ साहब।
व एकसौ चौबिस की सारी लगभग दफ़ायें रद्दी कराना होगा॥
हमारे लीडर विदेशों को जो पठाये जबरन गये हैं फ़ौरन।
स्वदेश आने का हुकम उनके लिये भी तुमको सुनाना होगा॥
विभाग खुफ़िया पुलिस का तोड़ो या उस पै अधिकार हो हमारा।
व आत्म रक्षा के हेतु हमको भी चेम्पियन गन बँधाना होगा॥
"विमल" ये कहते हैं लार्डइर्विन से कहना गाँधी का पूरा करदो।
नहीं तो अपनी प्रजा के क़दमों में शीश तुमको झुकाना होगा॥

इति॥

...की अपूर्व पुस्तकें

...हिंदू समाज में इतना अधिक मान ...के इनके मनोहर गाने घर-घर में ...बड़े प्रेम से गाती हैं। लोग सैकड़ों की ...त्रियों एवं बहुओं को देते, कन्या-पाठशालाओं ...दी आदि उत्सवों में वितरण करते हैं—

... ...	≡)	होली हिंदू-सुधार ...	≡)
...(प्रथम भाग)	≡)	अछूत-पुकार ...	≡)
...त-रत्न (द्वितीय ,,)	≡)	राष्ट्रीय डंका व स्वदेशी खादी	≡)
सीता-सती	≡)	क़ौमी डंका और स्वदेशी खादी उर्दू	≡)
सोहागरात के वादे ...	≡)		
अनमेल-विवाह... ...	|≡)	क्रान्ति का सिंहनाद अथवा महात्मा गाँधी का अल्टीमेटम	≡)
बिधवा-विवाह	≡)		
औंधी खोपड़ी और घोंघाबसंत	≡)	शारदा ऐक्ट बाल बिवाह निषेध क़ानून	)॥
कन्या-संगीत-रत्न ...	≡)		
वेश्या-दोष दर्शन ...	≡)	सावित्री-सत्यवान ...	=)
जुआ-दोष-दर्शन ..	≡)	नारी-संगीत-रत्न (चारों भाग)	|=)
नशा-दोष-दर्शन ...	≡)	स्त्री-शिक्षा-गायन ...	≡)

आवश्यक सूचना—सावधान ! सावधान !! लोभ में आकर कोई महाशय विमल-ग्रन्थमाला की पुस्तकों के गाने चुराने वा दूसरी लिपि में छापने की चेष्टा न करें, अन्यथा वे न्यायालय से दण्डित होकर भारी हानि उठावेंगे !!!

प्रचारकों और बुकसेलरों की हर जगह ज़रूरत है।

नियम इत्यादि पत्र भेजकर मालूम करें। माल चौथाई पेशगी पाने पर भेजा जाता है। पत्र इस पते से भेजें—

संचालक विमल-ग्रन्थमाला आफ़िस

सआदतगञ्ज, लखनऊ।